संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

56

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

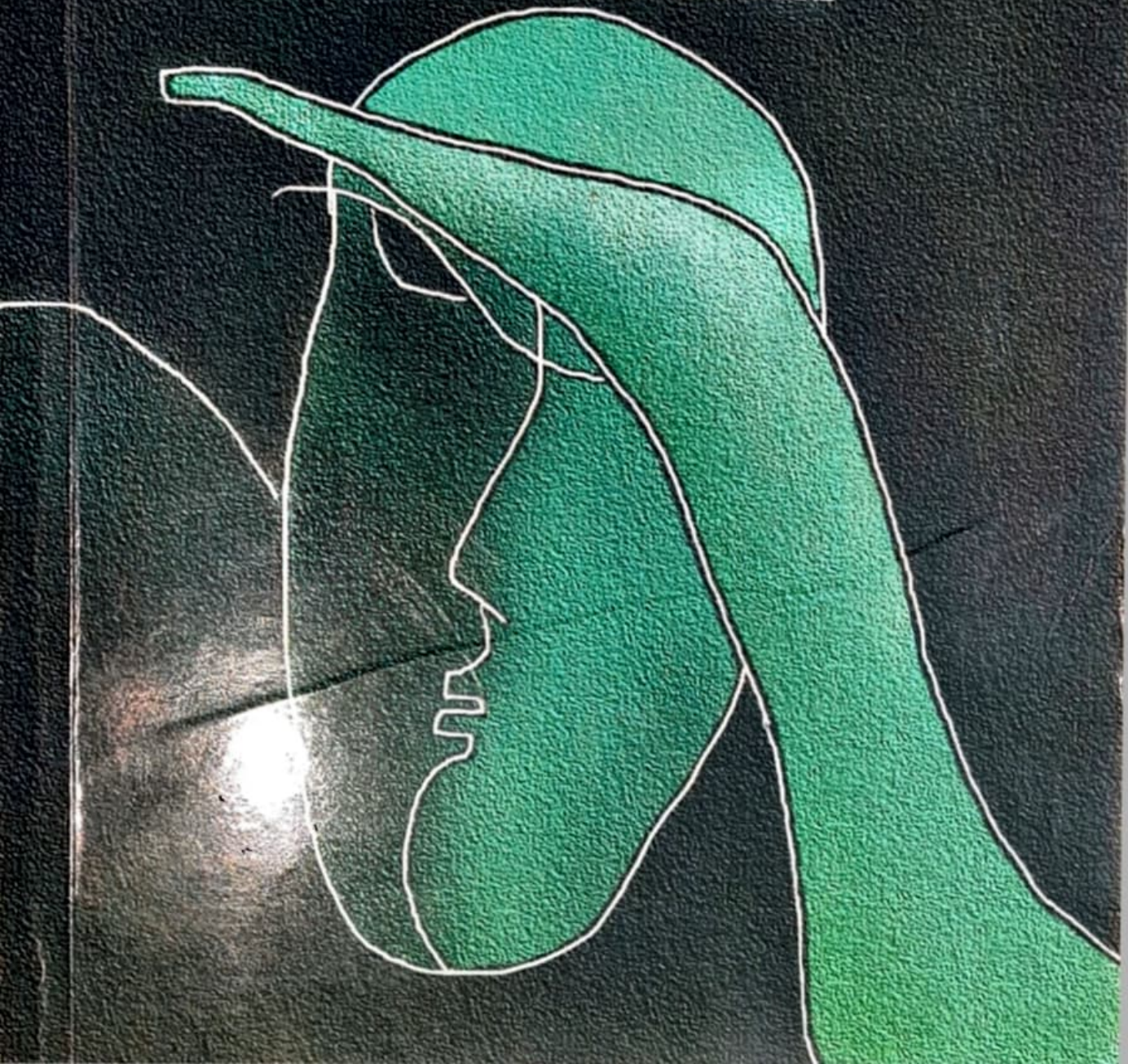

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 56/3 अक्टूबर-दिसंबर 2021 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम
प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : छह हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री-जीवन/ **डॉ॰ अजय कुमार** 99
मृदुला सिन्हा का नारी विषयक चिंतन/ **डॉ॰ अन्नाराम शर्मा, श्रीमती शकीला** 106
सूफीमत की अवधारणा एवं प्रेमाख्यानक काव्यपरंपरा/ **डॉ॰ लक्ष्मी गुप्ता** 112
साकेत संत में भरत का भातृत्व प्रेम/ **डॉ॰ सविता मिश्रा, मिनेश्वरी** 118
महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त परंपरा विरोधी स्त्रियाँ/ **पूजाराधा** 123
ग्रामीण मजदूरों की उभरती विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण एवं उनसे निपटने में सरकार की भूमिका/ **डॉ॰ जीतेंद्र कुमार** 128
समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना/ **रश्मि सिंह, डॉ॰ ललिता कुमारी** 132
विद्यासागर नौटियाल के साहित्य में लोकतत्व/ **विजय सिंह** 13
पिछड़े बालकों के शैक्षिक उपलब्धि में बुद्धि तथा रुचि/ **खुशबू साव, इशिता** 14
हिंदी भक्तिकाव्य परंपरा के परिप्रेक्ष्य में श्याम काव्य का अनुशीलन/ **डॉ॰ प्रशांत द्विवेदी** 14
मार्कंडेय की कहानियों में अभिव्यक्त दलित मुक्ति-चिंतन/ **डॉ॰ रमेश तिवारी** 15
मार्कंडेय की कहानियों में अभिव्यक्त समाज/ **डॉ॰ महेंद्र सिंह** 16
प्रतिनिधि हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श/ **डॉ॰ अनिता वेताळ/अंत्रे** 16
बुंदेलखंड महाविद्यालय झाँसी के बी॰एड॰ विभाग में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की शिक्षक प्रभावशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि में सह-संबंध का अध्ययन/ **डॉ॰ अश्वनी कुमार** 1
जितेंद्र श्रीवास्तव की कविता में जनजीवन/ **वैशाली** 1
शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की अधिगम शैलियों का तुलनात्मक अध्ध्ययन/ **विजया थोटेकर, प्रो॰ ममता बाकलीवाल** 1
महात्मा गांधी के वैचारिक परिप्रेक्ष्य में विष्णु प्रभाकर का नाट्य-सहित्य/ **सदफ गौरी** 1
'राम' नाम और भारतीय संस्कृति/ **डॉ॰ सुषमा कुमारी** 1
महेंद्र भीष्म कृत 'मैं पायल' और नीरजा माधव कृत 'यमदीप' का तुलनात्मक अध्ययन/ **अजीत कुमार सिंह**
स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिदृश्य और मोहन राकेश की कहानियाँ/ **डॉ॰ मधु कौशिक**
डॉ॰ सत्यनारायण के रचना-संसार में आंचलिकता और पत्रकारिता यथार्थ/ **डॉ॰ स्वरूपराम गौड़**
नवजागरण की वैचारिकता का दस्तावेज : भारत दुर्दशा/ **डॉ॰ प्रियंका मिश्र**
किन्नर जीवन की यथार्थपरक अभिव्यक्ति : दास्तान-ए-किन्नर/ **सूबी गुप्ता**
जयप्रकाश नारायण : समाजवादी चिंतन में योगदा/ **डॉ॰ दानवीर सिंह**
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखंड के आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं का योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन/ **डॉ॰ नीरज रुवाली**

सूफीमत की अवधारणा एवं प्रेमाख्यानक काव्यपरंपरा

डॉ॰ लक्ष्मी गुप्ता
सहायक प्रवक्ता, हिंदी
गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, यमुनानगर (हरियाणा)

साहित्य मानव जीवन की सहज अभिव्यक्ति का सरल माध्यम है। साहित्य जीवन का अलंकार ही नहीं, अपितु स्वयं जीवन है। साहित्यकार सृजन के क्षणों में उन अनुभवों को जीवंत स्वरूप प्रदान कर शब्दबद्ध करता है, जिनका संचय वह सामाजिक व विविध परिस्थितियों के माध्यम से करता है। महादेवी वर्मा के अनुसार, 'साहित्य में हम जीवन के अनेक गहरे अपरिचित स्वरों में मनोवृत्तियों के अनेक अज्ञात छायालोकों में जीवित होकर अपने जीवन के विस्तार, अनुभूतियों को गहराई और चिंतन को व्यापकता देकर समष्टि से आत्मीय संबंधों को जोड़ते हैं।' साहित्य एक ओर तो सामाजिक परिवेश, पूर्व परंपरा, युगबोध, युगीन-अपेक्षा और युगीन माँगों आदि से प्रभावित होकर रूपाकार ग्रहण करता है। दूसरी ओर वह विशिष्ट प्रतिभाओं द्वारा सृजित होकर मानवीय व्यवहार, मानवीय अंतर्संबंधों, मानवीय संस्थाओं, नैतिक मूल्यों तथा व्यक्ति और समूह की जीवन दिशाओं को गंभीरता से प्रभावित करके उनके लिए 'प्रभावक', नियामक और प्रवर्तक की मुद्रा में भी अवतरित होता है।[1]

सृष्टि के प्रारंभ से ही नारी किसी-न-किसी रूप में साहित्य व समाज को प्रभावित करती रही है। 'प्राचीन भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक साहित्य में नारी की सृजनशक्ति को आधार बनाकर उसकी अर्थवत्ता को स्वीकार करते हुए नारी विमर्श की नींव पड़ी।'[2] निरंतर अपेक्षा व उपेक्षा के दुकूलों के मध्य संघर्ष करती हुई नारी सृष्टि के सृजन की प्रणेता के साथ दया, ममता, संवेदना, भावना, करुणा, क्षमा, वात्सल्य, त्याग, सेवा व समर्पण के गुणों से युक्त होकर साहित्य का वर्ण्य विषय बनी। जहाँ अपने त्याग-सेवा-समर्पण के गुणों के आधार पर उसने 'रामचरितमानस' में सीता के सर्वोच्च पद को सुशोभित किया तो वहीं सूरदास की विरह-व्यथित गोपियों के रूप में प्रेम की अजस्रधार से आराध्य श्रीकृष्ण के प्रति अपने करुण भावों को निवेदित किया।

अभिप्राय यह है कि साहित्य व नारी का अत्यंत घनिष्ठ संबंध रहा है। हिंदी साहित्य का स्वर्णिम युग भक्तिकाल राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तनों की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा। हिंदू-मुसलमानों के पारस्परिक भेदभाव व कटुता में मिठास घोलने का कार्य सूफी साधकों ने अपनी प्रेममयी भाषा के द्वारा किया। सूफी साधकों ने मुस्लिम धर्म के अंतर्गत भारतीय वेदांत के दार्शनिक तथ्यों को स्वीकार कर भारतीय भक्ति-भावना को महत्त्व देते हुए सरल, सहिष्णु एवं उदार भावों से ज्ञान, उपदेश और भक्ति-भावना द्वारा जनमानस को प्लावित किया। सूफी कवियों ने प्रेम रूपी प्रकाश स्तंभ जलाकर प्रेम-कथाओं के माध्यम से अपनी इस्लामी संस्कृति व सिद्धांतों को किसी भी प्रकार के विरोध की भूमि से ऊपर उठाकर जन-भाषा और जन-प्रकाशित वाणी-विलास के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। सूफी मत

 ISSN 0975-735X

का लक्ष्य है–'लौकिक तथा सौंदर्य के प्रतीकों में 'परम इष्ट' के प्रेम और सौंदर्य की झलक देखना। यही कारण है कि 'शाश्वत सौंदर्य' सूफी प्रेम काव्यों में नारी रूप में सृजित हुआ।"[3]

'सूफी' शब्द का साधारण अर्थ इस्लामी संत से लिया जाता है। फारसी भाषा में जिसे 'तसव्वुफ' कहते हैं, वह हिंदीभाषा में सूफीमत के नाम से प्रसिद्ध है। 'सूफीमत की साधना का केंद्रबिंदु प्रेम है। उनकी साधना प्रेम की साधना है। उनका साधन मार्ग प्रेम-पंथ है। उनका प्राप्य प्रेम-प्रभ है।"[4] यदि सूफी साधकों को प्रेमी साधक के नाम से अभिहित किया जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने प्रेम को तीन रूपों में प्रयुक्त किया है। प्रथम वह प्रेमास्वाद के लिए अविराम लालसा, झुकाव तथा आसक्ति के रूप में प्रयुक्त होता है जिसका संबंध सांसारिक वस्तुओं, प्राणियों और उनके पारस्परिक प्रेम से होता है। पर वह ईश्वरीय प्रेम नहीं कहा जा सकता। ईश्वरीय प्रेम सर्वोत्तम है। द्वितीय प्रकार के प्रेम का अर्थ ईश्वरीय कृपा है, जो ईश्वर द्वारा किसी व्यक्ति को प्राप्त होती है, ऐसे व्यक्तियों को ईश्वर पूर्ण साधुता प्रदान करता है और अपनी अपूर्व कृपा से उसे विशिष्ट बना देता है। तृतीय प्रकार के प्रेम में ईश्वर व्यक्ति को सद्कार्य के लिए सद्गुण प्रदान करता है।

'कश्फुल महजूब' में हुज्विरी ने प्रेम के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि 'ईश्वर के प्रति मानव का प्रेम वह गुण है जो केवल उन पवित्र व्यक्तियों में श्रद्धा और गरिमा के रूप में प्रकट होता है, जिनकी ईश्वर में आस्था है। इसलिए कि वह अपने प्रिय को संतुष्ट कर सके और उसके दर्शनार्थ विकल हो उठे।...ऐसा व्यक्ति उसके स्मरण में लगा रहता है और किसी अन्य का स्मरण नहीं करता है।' इसी प्रकार द्वितीय प्रसिद्ध सूफी विद्वान शेख शहाबुद्दीन सुहर्वर्दी ने भी प्रेम को परिभाषित करते हुए कहा कि 'सौंदर्य के गहरे चिंतन के लिए हृदय का झुकाव ही प्रेम है।"[5] जबकि शेख मुहीउद्दीन इल अरती ने पूर्व सूफी विद्वानों के दृष्टिकोण से अलग नारी प्रेम को भी ईश्वरीय प्रेम साधना के स्वरूप मानते हुए अपने 'फुसुसुल हिकाय' ग्रंथ में स्पष्ट किया कि 'जिस प्रकार ईश्वर की प्रतिच्छाया के रूप में ईश्वर का निर्माण हुआ है, उसी प्रकार पुरुष की प्रतिच्छाया के रूप में स्त्री की रचना हुई है। इसलिए व्यक्ति स्त्री और ईश्वर दोनों से प्रेम करता है। स्त्री का पुरुष से वही संबंध है, जो ईश्वर का प्रकृति से है। अत: इस अर्थ में जब स्त्री से प्रेम किया जाता है तो वह प्रेम ईश्वरीय हाता है।"[6]

सूफी कवियों ने इस बात पर विशेष बल दिया कि वास्तविक प्रेम का मूल आधार श्रद्धा व विश्वास है। जिसमें बुद्धितत्त्व की अपेक्षा हृदय पक्ष की प्रधानता रहती है। सूफी मत के प्रचार काल (तेरहवीं शताब्दी) में समस्त सूफी काव्यकारों ने इस तथ्य को अपनी लेखनी का आधार बनाया और लौकिक प्रेम कथाओं के माध्यम से ईश्वरीय प्रेम को प्रकट करते हुए अपनी दिव्य भावनाओं का प्रकाशन किया।

भारत में सूफीमत का प्रवेश एवं प्रेमकाव्य परंपरा

सृष्टि का मूल 'प्रेम' अनिवर्चनीय तथा मूकास्वादनवत् है।[7] जिसे वाणी या शब्दों का विषय नहीं बनाया जा सकता। 'प्रेम को राग की उस मनोवृत्ति का पर्याय कहा जा सकता है जिसमें एक व्यक्ति किसी अन्य विशिष्ट व्यक्ति के रूप, गुण, स्वभाव, शील, सामीप्य आदि के प्रति आकर्षित होता है। प्रवृत्ति अप्रतिहत और अबाधित होकर प्रेमी को अपने प्रेमास्पद के लिए चेष्टा-रत बनाए रखती है। यही कारण है कि प्रेम में एक प्रकार का तादात्म्य भाव, एकरसता, एकरूपता, अनन्यता आदि भाव बन जाते हैं, चित्त की ये अवस्थाएँ भी फिर एक प्रकार के आत्मार्पण के भाव से मर्यादित हो जाती हैं।"[8] हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रेम को

परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'प्रेम एक संजीवन रस के रूप में प्रेमी के सारे जीवन-पथ को रमणीय और सुंदर कर देता है।"[10] तो वहीं सूफी कवि उस्मान के अनुसार–

आदि प्रेम विधि नै उपराजा, प्रेमहि लागि जगत सब साजा।
आपन रूप देखि सुख पावा, अपने हिए प्रेम उपजावा।
प्रेम किरन ससि रूप जेउँ, पानि प्रेम जिमि हेम।
एहि विधि जहँ-तहँ जानि एहु, जहाँ रूप तहँ प्रेम।"[11]

संक्षेप में, भारतीय वाक्मय की श्रीवृद्धि में प्रेमाख्यान साहित्य की सूफी काव्यधारा का विशिष्ट योगदान रहा है। सूफी प्रेमाख्यानों का आरंभ सन् 1380 में मुल्ला दाऊद कृत 'चंदायन' से माना जाता है। भारत में सूफी मत का प्रवेश ईसा की बारहवीं शताब्दी से हुआ। भारत में इस धर्म का पदार्पण चार संप्रदायों के रूप में हुआ। जो समय-समय पर देश में प्रचलित होकर प्रसिद्ध हुए। इन संप्रदायों से प्रभावित होकर प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा का परिचय चारणकाल से ही मिलना प्रारंभ हो जाता है। भक्तिकाल में प्रेमकाव्य का प्रारंभ 'चंदायन' से स्वीकार किया जाता है। जिस समय मुल्ला दाऊद ने इस ग्रंथ की रचना की, वह समय अलाउद्दीन खिलजी के राजस्वकाल का समय था। जहाँ हिंदू धर्म के प्रति अश्रद्धा होते हुए भी, कुछ मुसलमानी हृदयों में हिंदू प्रेमकथा के भाव विद्यमान थे। प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा पर विवेचन करने से पूर्व यह तथ्य उल्लेखनीय है कि सूफी प्रेमाख्यानकों में नारी-भावना को आधार बनाकर प्रेम भाव को निरूपित किया और नारी को ईश्वरीय प्रेम का साधक मानकर उसे आध्यात्मिक भूमि पर प्रतिष्ठित किया है। ऐसे में एक ओर वह नारी निर्गुण ब्रह्म की प्रतीक रूप में श्रद्धास्पद है, तो वहीं दूसरी ओर वह माया का रूप धरकर मानव के लक्ष्य-प्राप्ति के मार्ग में बाधा स्वरूप उठ खड़ी होती है। सूफी कवियों ने प्रेमाख्यानक काव्यों के अंतर्गत सूफी सिद्धांतों के प्रतिपादन का विशेष ध्यान रखा है। 'सूफी संप्रदाय का मूलाधार प्रेम है, प्रेम को ही इस साधना का पर्याय कहा जा सकता है। इसमें साधक भी प्रेम है, साधन भी प्रेम है और साध्य भी प्रेम ही है। प्रेम में तीनों का अद्वैत सूफियों के अद्वैत की विशिष्टता है।"[12] इस संदर्भ में अल्फैड गुइलोन ने 'इस्लाम' नामक पुस्तक में लिखा है कि 'To say 'I' and 'God' is to deny the unity of god. Lover, beloved and love are one.'[13] यहाँ 'Lover' प्रेमी साधक है, 'beloved' प्रेयसी साध्य और प्रेम ही साधन है। तीनों में अद्वैत है।' यहाँ आत्मा स्वयं प्रेम है, उस परम सत्ता परमात्मा से जो भी प्रेम है, प्रेम से जो कि साधन भी है, तादात्म्य भाव को प्राप्त करता है। प्रेमी प्रेम के माध्यम से प्रेयसी-मय हो जाता है। यही प्रेम की पूर्णता एवं सूफी के साधना का प्राप्तव्य है। ऐसा माना जा सकता है कि इसको निरूपित करने के लिए भौतिक प्रेम की सारी विवृत्ति आध्यात्मिक प्रेम की गंभीरतम अनुभूति की प्रतीक बनकर इन काव्यों में आई है, उनके नायक साधक आत्मा के रूप में ब्रह्म रूप साध्य नायिकाओं को प्रेम एवं प्रेम की पीर पूर्ण आत्मानुशासन द्वारा प्राप्त करते हैं। यही कारण है कि प्रेमगाथाओं में 'नारी तत्त्व' विशेष रूप से उभरकर आया है जहाँ वह बौद्धिक तर्क-वितर्क रहित, सरल हृदया व अपूर्व सौंदर्यशालिनी हैं। वह वास्तव में सत्य्, शिव और सुंदर है। साधक उसके प्रथम दर्शन कर साहस एवं दृढ़ता प्राप्त करता है। वह पुरुष की गुरु बनकर प्रेमपथ की दर्शिका, साधना, उपासना और भक्ति की पात्री है। समस्त विश्व उसके अलौकिक स्वरूप का ही प्रतिबिंब है।"[14]

सूफी विचारधारा के अनुसार प्रियतम परम ब्रह्म सौंदर्य का रूप है। वे प्रियतम रूपी ब्रह्म को नारी रूप में और प्रेमी साधक को पुरुष रूप में स्वीकार करते हैं। वस्तुत: सूफी काव्यों की

नायिकाएँ आध्यात्मिक धरातल पर सूफी साधकों के प्रियतम अर्थात् परमात्मा हैं और नायक साधक रूप में आत्मा है। जहाँ आत्मा के द्वारा परमात्मा को प्रेम के माध्यम से प्राप्त करना ही सूफी साधना का परम लक्ष्य है। महाकवि जायसी के अनुसार–'मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी। नाहितं काह छार एक मूँठी।"[15]

अर्थात् प्रेम के द्वारा मानव अमरत्व को प्राप्त करता है। जिस कारण उनका विश्वास है कि 'प्रेम पंथ जौ पहुँचे पारां। बहुरि न मिलै आइ एहि छाएँ।"[16]

वस्तुत: सूफी साधकों का प्रधान लक्ष्य सृष्टि के कण-कण में प्रियतम के स्वरूप को स्वीकार कर निरंतर उसके प्रेम-विरह का आनंद उठाकर साक्षात्कार की अनुभूति करना और अंततोगत्वा चिरमिलन का आनंद प्राप्त करना है। सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा का आरंभ मुल्ला दाऊद कृत 'चंदाचन' से माना जाता है। इसका समय 1380 है। काव्य की नायिका चंदा तथा नायक 'गोबर युद्ध' का विजेता वीर लोरिक है। प्रस्तुत काव्य में प्रेम का प्रथमोन्मेष काव्य नायिका चंदा के हृदय में होता है। जो वीर लोरिक की शोभा यात्रा के अवसर पर उसके अप्रतिम सौंदर्य को देखकर अभिभूत हो उठती है–

चांदहि लोरिकु निरखि निहारा। देखि विमोही गई बेकारा।
सुरजि सनुह चाँद कुबिलानी। आई बिरसपति छिरका जनी।"[17]

इस संदर्भ में परमेश्वरीलाल जी ने चंदायन की भूमिका में लिखा है कि 'सामान्यत: नायक ही नायिका प्राप्ति की चेष्टा किया करते हैं, किंतु इस प्रकार की कोई चेष्टा लोरिक की ओर से नहीं होती है। नायिका चंदा ही प्रेम-वशीभूत होने के कारण सामान्य नायिकाओं के समान स्वभाव के सर्वथा प्रतिकूल लोरिक को प्राप्त करने की ओर सचेष्ट होती है।' प्रस्तुत काव्य ग्रंथ में नायिका चंदा का मानना है कि प्रेम निर्वाह के लिए सत्य भाव का होना आवश्यक है। जिस कारण वह लोरिक के प्रेम के प्रति सत्यभाव रखती हुई उसके लिए अनेकानेक दुखों को सहन करती है। 'चंदायन' में नायिका चंदा के प्रेम का स्वरूप सूफी सिद्धांतानुसार प्रथमत: लौकिक रूप में ही दृष्टिगत होता है किंतु अलौकिकता का आभास लोरिक (जीव) में दिखाई देता है तो ब्रह्म (चंदा) प्राप्ति व उससे मिलन हेतु निरंतर आकुल-व्याकुल रहता है। प्रस्तुत काव्य के चंदा 'चाँद का तथा 'लोरिक सूरज का प्रतीक है जहाँ मिलन हेतु प्रयास यद्यपि दोनों ओर से होता है। किंतु नायिका इस मिलन हेतु अधिक प्रयत्नशील रहती है जिसमें विरहजनित व्याकुलता व एकनिष्ठता सहित व्यक्तित्व विसर्जन का भाव पूर्णत: निहित रहता है।

प्रेमाख्यान काव्य परंपरा का द्वितीय प्रसिद्ध ग्रंथ कवि मंझन द्वारा रचित 'मधुमालती' काव्य है। मधुमालती काव्य के अंतर्गत जिस प्रकार कवि ने प्रेम के विस्तृत रूप का वर्णन किया है, वैसा किसी अन्य सूफी कवि की रचना में दुर्लभ है। कथानायक राजकुमार मनोहर कथा नायिका मधुमालती से अप्सराओं की सहायता से साक्षात्कार करता है। जहाँ उसके हृदय में प्रेम का उद्भव हो जाता है। नायिका मधु मनोहर के प्रेमपूर्ण वार्तालाप व उसके परस्पर परिचय को पूर्वजन्म से संबंधित मानकर प्रेम में अभिभूत रहती है। दोनों के मध्य प्रारंभ में ही इतना अधिक प्रेम रहता है कि द्वित्व का भाव समाप्त होकर दोनों जीव एकाकार हो जाते हैं–

रूप मोर घट दरपन तोरा, मैं सूरज तुई जगत अंजोरा।
जैसे जोति रतन नग माही, मैं तोहि मोहि तुई सार।
रतन जोति ऐस मोहि ताहि को वेगरावै पार।"[18]

प्रेम की सर्वस्वता व सर्वव्यापकता के लिए विरह का होना अतिआवश्यक है क्योंकि विरह प्रेम की कसौटी है। कवि मंझन के अनुसार विरह का दुख प्रेमी को उसके प्राणों से भी अधिक प्रिय है। जो आनंद इस विरहजनित दुख की अवस्था में है वह चतुर्युग के सुखों में भी नहीं–

मैं सभ तजि संकरेउं दुख तोरा। मोंर जिउतोर तोर जिउ मोरा।
प्रान आदि घट होत न आवा। विधि तोर दुख मोरहिं तब दरसावा।
एक निमिख दुख कहं नहिं पूजै चारिउं युग क सवाद।
कौन कौन सुख वेरसब तेहि दुख के परसाद।[19]

प्रियतम के लिए यदि जीवन भी समर्पित करना पड़े तो प्रेमिका उससे भी वह पीछे नहीं हटती है। उसका मानना है कि प्रियतम के लिए जीवनदान करने पर जीव दोनों जगत में शोभायमान होता है। विरहावस्था में षड्ऋतुएँ निरंतर उसकी विरहाग्नि को प्रज्वलित करती रहती हैं और अंत में ताराचंद की सहायता से उसे अपने प्रेम की प्राप्ति होती है।

'पद्मावत' प्रेमाख्यान काव्य परंपरा का सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। कवि ने चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और सिंघलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती की लौकिक प्रेमकथा के माध्यम से अलौकिक प्रेम का चित्रण किया है। यद्यपि पद्मावत एक सफल प्रेम काव्य है किंतु कवि जायसी ने अपनी प्रेम-साधना के माध्यम से इसमें निराकार ब्रह्म की आरती उतारते हुए अपना सर्वस्व उन्हीं में निमज्जित किया है। प्रस्तुत काव्य में कवि ने प्रेममार्ग के महत्त्व, उसके निर्वहन, प्रेम गरिमा, सौंदर्य वर्णन व प्रेम पथ में आनेवाली विषम बाधाओं का विस्तृत वर्णन किया है। कवि का मानना है कि जिसका हृदय प्रेमरूपी बाणों से पूरी तरह बिंध जाता है, वही इसके वास्तविक मर्म को समझ सकता है–'प्रेम घाव दुख जान न कोई। जेहि लागै जानै पै सोई।'[20]

उनका मानना है कि सच्चा प्रेम वही है, जो प्राणोत्सर्ग से भी पीछे नहीं हटता। आदर्श एवं पवित्र प्रेम की साधना अत्यंत दुष्कर है जिसके आत्मसमर्पण द्वारा ही आनंद की प्राप्ति होती है। सूफी प्रेमाख्यानक के अंतर्गत आलंबनत्व को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। जबकि कवि जायसी ने प्रेम के आलंबन (नायक-नायिका) को आध्यात्मिक प्रेम की उच्चता के अनुकूल अत्यंत महिमामय रूप में प्रतिष्ठित किया है। आलंबन की व्यक्तित्व प्रतिष्ठा करते हुए उन्होंने केवल फारसी प्रेमाख्यानों की रूढ़ियों का अनुसरण ही नहीं किया वरन् भारतीय मर्यादा का भी पूरा पालन किया है। उनके प्रेम की सबसे बड़ी विशेषता ही यह है कि उन्होंने प्रेम की आध्यात्मिक गरिमा के अनुकूल ही आलंबन को महिमामयी एवं वीरोदात्त बनाया है जिसका सफल प्रस्फुरण पद्मावत महाकाव्य में सहज ही देखा जा सकता है।

मृगावती काव्य में प्रेम की प्रगाढ़ता, अनन्यता व दृढ़ता के साथ-साथ त्याग भाव भी निहित है। प्रेम की परिणति मिलन में है लेकिन लौकिक प्रेमोपलब्धि यथेष्ट नहीं होती। मृगावती प्रेम का अलौकिक आनंद प्राप्त करती है। वह राजकुमार के विरह-वियोग में अपने प्राण रूपी पक्षी को निकाल देना चाहती है। विरहाग्नि में निरंतर जलने के कारण उसके पंख तक जल जाते हैं। जिस कारण वह उड़ नहीं सकती और निरंतर हाथ मल-मलकर रोती रहती है। अनन्य प्रेमिका मृगावती की विरहदग्धता सभी के लिए असहनीय हो जाती है। आखेट प्रिय राजकुमार की मृत्योपरांत मृगावती वियोग सहन नहीं कर पाती है, जिस कारण वह सती होकर इंद्रलोक में उससे पुनर्मिलन करती है।

राजकुमार का मृगी के रूप में मृगावती का दर्शन करना, उसको प्राप्त करने हेतु योगी

 ISSN 0975-735X

 ISSN 0975-735X

होना, अनंत संकटों का सामना करते हुए मृगावती को प्राप्त करना, यह सभी प्रयत्न सूफी मतानुसार आत्मा का परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयत्न दृष्टिगोचर होता है। एक जीवात्मा नारी रूप परमात्मा को प्राप्त करने में कितना विह्वल, व्याकुल और तीव्रता महसूस करता है। परमात्मा बार-बार उसकी परीक्षा लेता है और जब वह उसे अपनी कसौटी पर पूरी तरह खरा पाता है तो मिलन के आनंद का अवसर प्रदान करता है। कुल मिलाकर मृगावती का आरंभ, पूर्वार्द्ध लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिकता की अभिव्यंजना करता नजर आता है। उत्तरार्द्ध में मृगावती का विरह, ईर्ष्या आदि भाव लौकिक प्रेम का निर्वाह करते दिखाई देते हैं किंतु अंत में प्रिय संग सती होना, जीवात्मा-परमात्मा के एकत्व व महामिलन की स्थिति को स्पष्ट करता है। इसी प्रकार चित्रावली, ज्ञानद्वीप, नल दमन, इंद्रावती आदि काव्य भी सूफी प्रेम का सफल चित्रण करते हैं।

अस्तु, सूफी साधना में प्रेम का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। जहाँ प्रेम ही कर्म और प्रेम ही धर्म है। प्रेम ही पंथ और प्रेम ही परमात्मा है। वास्तव में सूफीकाव्य परंपरा के अंतर्गत सूफी काव्य की प्रत्येक कथा का मूलाधार 'प्रेम' है। जहाँ उन्होंने प्रेम की पवित्रता व दिव्यता द्वारा नायक-नायिका को आधार बनाकर ईश्वरीय प्रेम की सफल भावाभिव्यक्ति की है।

संदर्भ

1. डॉ॰ मैथिलीप्रसाद भारद्वाज, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, पृ॰ 280
2. डॉ॰ उषारानी, नारी विमर्श और हिंदी साहित्य, संजय प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2015, पृ॰ 27
3. डॉ॰ दुर्गावती खुटेटा, सूफी प्रेमगाथाओं में नारीतत्त्व : स्वरूप तथा स्रोत, नटराज पब्लिशिंग हाउस, करनाल (हरियाणा), प्रथम संस्करण 1985, पृ॰ 9
4. निजामुद्दीन अंसारी, सूफीकवि जायसी का प्रेमनिरूपण, पुस्तक संस्थान, कानपुर, पृ॰ 23
5. निकलसन, अनुवादक-कश्फुल महजूब, पृ॰ 306-307
6. एच॰ विल्वर फोस क्लार्क, अनु॰ आवारिफुल मारिफ, शेख शहाबुद्दीन उमर बिन सुहर्वर्दी, पृ॰ 101
7. A.M.A. Sustery, iutline fo Indian Oulture, Page 390
8. नारद भक्ति सूत्र, 51-52
9. दुर्गावती खुटेटा, सूफी प्रेमगाथाओं में नारीतत्त्व : स्वरूप तथा स्रोत, पृ॰ 205
10. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, चिंतामणि भाग-1, पृ॰ 89-90
11. कवि उस्मान, चित्रावली, छंद 29/5
12. दुर्गावती खुटेटा, सूफी प्रेमगाथाओं में नारीतत्त्व : स्वरूप तथा स्रोत, पृ॰ 377
13. अल्फैड गुइलौन, इस्लाम, पृ॰ 143
14. दुर्गावती खुटेटा, सूफी प्रेम गाथाओं में नारीतत्त्व : स्वरूप तथा स्रोत, पृ॰ 378
15. मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत, 166/2
16. मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत, 146/7
17. मुल्ला दाऊद, चंपायन, कडवर 138/1,2
18. मंझन, मधुमालती, छंद 121
19. डॉ॰ माताप्रसाद गुप्त, मधुमालती (संपा॰), मित्र प्रकाशन प्रा॰लि॰, इलाहाबाद, संस्करण 1964, पृ॰ 94
10. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, जायसी ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, पृ॰ 49